Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उभरते भारत में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

तिलकराज
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक
tilakrajpolitical@gmail.com

सारांश:
डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, जिन्हें बाबासाहेब अम्बेडकर के नाम से जाना जाता है, भारत के संविधान के शिल्पी, समाज सुधारक, अर्थशास्त्री, और दलित आंदोलन के प्रणेता थे। उनके विचार सामाजिक समानता, शिक्षा, लैंगिक समानता, आर्थिक न्याय, और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित थे। भारत, जो आज वैश्विक मंच पर एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना रहा है, सामाजिक-आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, और राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। यह शोध पत्र अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता को आधुनिक भारत के सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिदृश्य में विश्लेषित करता है, और यह दर्शाता है कि उनके सिद्धांत भारत को एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज बनाने में कैसे मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

मुख्य शब्द: सामाजिक न्याय, संविधान और लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकार।

परिचय:
भारत 21वीं सदी में एक आर्थिक और सामरिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। विश्व बैंक (2024) के अनुसार, भारत की जीडीपी वृद्धि दर 7.2% रही है, और यह 2030 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, और आत्मनिर्भर भारत जैसे पहल भारत को वैश्विक मंच पर मजबूत कर रहे हैं। हालांकि, सामाजिक-आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, और शिक्षा-स्वास्थ्य सेवाओं में असमान पहुंच जैसे मुद्दे भारत की प्रगति को चुनौती दे रहे हैं।डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने अपने जीवनकाल में इन मुद्दों को गहराई से समझा और उनके समाधान के लिए वैचारिक, नीतिगत, और व्यावहारिक ढांचा प्रस्तुत किया। उनकी दृष्टि न केवल दलित और वंचित वर्गों के उत्थान तक सीमित थी, बल्कि यह एक समग्र सामाजिक परिवर्तन की वकालत करती थी। उनके विचार आज के भारत में सामाजिक न्याय, समावेशी विकास, और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। यह शोध पत्र अम्बेडकर के विचारों को उभरते भारत के संदर्भ में विश्लेषित करता है और उनके सिद्धांतों को लागू करने के लिए नीतिगत और सामाजिक समाधान प्रस्तुत करता है।

डॉ. अम्बेडकर के प्रमुख विचार:
डॉ. अम्बेडकर के विचार सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक सुधारों पर आधारित थे। उनके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सामाजिक समानता और जाति विरोधी विचार:

अम्बेडकर ने हिंदू समाज की वर्ण व्यवस्था और जातिगत भेदभाव को सामाजिक एकता और प्रगति का सबसे बड़ा अवरोध माना। उनकी पुस्तक Annihilation of Caste (1936) में उन्होंने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था न केवल सामाजिक असमानता को बढ़ावा देती है, बल्कि यह मानवता, बंधुत्व, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी कमजोर करती है।

शिक्षा का महत्व:

अम्बेडकर ने शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का प्रमुख साधन माना। उनका प्रसिद्ध नारा, "शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो," वंचित समुदायों को अपनी स्थिति सुधारने के लिए प्रेरित करता था। उनकी दृष्टि में, शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक जागरूकता और आत्म-सम्मान का स्रोत थी। उन्होंने विशेष रूप से दलित और महिलाओं के लिए शिक्षा को प्राथमिकता दी।

लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्य:

भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी के रूप में, अम्बेडकर ने स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व के सिद्धांतों को संविधान का आधार बनाया। उन्होंने 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा में अपने भाषण में चेतावनी दी थी कि यदि सामाजिक और आर्थिक असमानता बनी रही, तो लोकतंत्र केवल एक औपचारिकता बनकर रह जाएगा। उनकी दृष्टि में, लोकतंत्र केवल शासन प्रणाली नहीं, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक जीवनशैली थी।

लैंगिक समानता:

अम्बेडकर ने हिंदू कोड बिल (1955-56) के माध्यम से महिलाओं के लिए संपत्ति, विवाह, तलाक, और उत्तराधिकार में समान अधिकारों की वकालत की। वे मानते थे कि महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक प्रगति का आधार है। उनकी यह दृष्टि उस समय के रूढ़िवादी समाज में क्रांतिकारी थी और आज के लैंगिक समानता आंदोलनों से गहराई से जुड़ी हुई है।

आर्थिक न्याय:

अम्बेडकर ने पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों की आलोचना की और "राज्य समाजवाद" की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें प्रमुख उद्योगों का राष्ट्रीयकरण और सामाजिक कल्याण योजनाओं पर जोर था। उनकी पुस्तक States and Minorities (1947) में उन्होंने आर्थिक समानता को सामाजिक समानता से जोड़ा। वे मानते थे कि बिना आर्थिक न्याय के सामाजिक न्याय संभव नहीं है।

उभरते भारत में अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता:

सामाजिक समानता और जातिगत भेदभाव:

भारत में संवैधानिक प्रावधानों, जैसे अनुसूचित जाति/जनजाति (SC/ST) के लिए आरक्षण और SC/ST (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989, के बावजूद, जातिगत भेदभाव आज भी सामाजिक ताने-बाने में गहरे तक समाया हुआ है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, दलितों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

और आदिवासियों के खिलाफ अपराधों में 7.3% की वृद्धि हुई, जिसमें 2022 में 50,900 मामले दर्ज किए गए। ग्रामीण क्षेत्रों में "ऑनर किलिंग," मंदिरों में प्रवेश पर प्रतिबंध, और सामाजिक बहिष्कार जैसे मामले अभी भी प्रचलित हैं। शहरी क्षेत्रों में भी, नौकरियों और शिक्षा में सूक्ष्म भेदभाव देखा जाता है।अम्बेडकर का "जाति का विनाश" का विचार आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि जातिगत पहचान न केवल सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि यह राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी प्रभाव डालती है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक दलों द्वारा जाति-आधारित वोटबैंक की रणनीति और कार्यस्थलों में भेदभाव इसकी निरंतरता को दर्शाते हैं। अम्बेडकर के विचार सामाजिक समरसता और समावेशी विकास के लिए नीतिगत और सामुदायिक पहल को प्रेरित करते हैं।

उदाहरण: सरकार की "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ," "स्किल इंडिया," और "प्रधानमंत्री आवास योजना" जैसी योजनाएं सामाजिक समावेशन को बढ़ावा दे रही हैं। हालांकि, इन योजनाओं को और प्रभावी बनाने के लिए अम्बेडकर के सामाजिक समानता के सिद्धांतों को और गहराई से लागू करने की आवश्यकता है।

शिक्षा और सशक्तिकरण:

भारत की 65% से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है, जिसके लिए शिक्षा और कौशल विकास राष्ट्रीय प्राथमिकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में समावेशी और समान शिक्षा पर जोर दिया गया है, जो अम्बेडकर के शिक्षा को सामाजिक क्रांति का हथियार मानने की दृष्टि से मेल खाता है। हालांकि, ASER (2023) की रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 25% बच्चे ही पांचवीं कक्षा तक बुनियादी गणित और पढ़ने-लिखने की क्षमता हासिल कर पाते हैं। डिजिटल डिवाइड (ग्रामीण-शहरी डिजिटल असमानता) ने भी शिक्षा की पहुंच को सीमित किया है।अम्बेडकर का शिक्षा पर बल आज डिजिटल युग में और भी प्रासंगिक हो गया है। डिजिटल इंडिया और स्वयं (SWAYAM) जैसे मंच मुफ्त और सस्ती शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जो वंचित वर्गों के लिए अवसर सृजित कर रहे हैं। इसके अलावा, स्टार्टअप और कौशल विकास कार्यक्रम, जैसे "स्किल इंडिया," युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद कर रहे हैं।

उदाहरण: स्वयं मंच पर 2024 तक 3 करोड़ से अधिक पंजीकरण हुए हैं, जिसमें ग्रामीण और वंचित समुदायों के छात्रों की भागीदारी बढ़ रही है। अम्बेडकर के विचारों को लागू करने के लिए इन मंचों को और अधिक सुलभ और समावेशी बनाने की आवश्यकता है।

लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्य:

भारत का लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा है, लेकिन हाल के वर्षों में ध्रुवीकरण, फर्जी खबरें, और अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर सवाल उठने जैसे मुद्दों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को चुनौती दी है। अम्बेडकर ने कहा था, "लोकतंत्र का आधार सामाजिक और आर्थिक समानता है। यदि यह नहीं है, तो लोकतंत्र केवल एक खोखली संरचना बनकर रह जाएगा।" आज के भारत में, सामाजिक ध्रुवीकरण, क्षेत्रीय असमानताएं, और सामाजिक-आर्थिक असमानता लोकतंत्र की मजबूती को कमजोर कर रही हैं।संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित "न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व" के सिद्धांतों को लागू करने के लिए नीतिगत और सामाजिक स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता है। अम्बेडकर के विचार संवैधानिक मूल्यों की रक्षा और

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सामाजिक एकता को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं।

उदाहरण: नीति आयोग द्वारा सामाजिक कल्याण योजनाओं, जैसे आयुष्मान भारत और उज्ज्वला योजना, को लागू करना अम्बेडकर के सामाजिक और आर्थिक न्याय के विचारों को साकार करने की दिशा में एक कदम है।

लैंगिक समानता:

भारत में लैंगिक असमानता एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2020-21) के अनुसार, 30% महिलाओं ने अपने जीवनकाल में शारीरिक या यौन हिंसा का सामना किया है। विश्व आर्थिक मंच (WEF) की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट (2024) में भारत का स्थान 129वां है, जो लैंगिक समानता में कमी को दर्शाता है। अम्बेडकर ने हिंदू कोड बिल के माध्यम से महिलाओं के लिए संपत्ति, विवाह, तलाक, और उत्तराधिकार में समान अधिकारों की वकालत की थी। उनकी यह दृष्टि आज के #MeToo और "महिला सशक्तिकरण" आंदोलनों से गहराई से जुड़ी हुई है।

उदाहरण: सरकार की "महिला सम्मान बचत पत्र," "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ," और "उज्ज्वला योजना" जैसी योजनाएं महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण में योगदान दे रही हैं। हालांकि, कार्यस्थल पर लैंगिक समानता और हिंसा के खिलाफ मजबूत कानूनी अमल की आवश्यकता है।

आर्थिक असमानता:

ऑक्सफैम की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 1% अमीरों के पास देश की 40% से अधिक संपत्ति है, जबकि 50% आबादी के पास केवल 3% संपत्ति है। यह आर्थिक असमानता सामाजिक तनाव और अस्थिरता को बढ़ा रही है। अम्बेडकर ने आर्थिक असमानता को सामाजिक असमानता से जोड़ा और "राज्य समाजवाद" की वकालत की, जिसमें प्रमुख उद्योगों का राष्ट्रीयकरण और सामाजिक कल्याण योजनाओं पर जोर था। आज के भारत में "आत्मनिर्भर भारत," "मेक इन इंडिया," और "प्रधानमंत्री मुद्रा योजना" जैसे कार्यक्रम आर्थिक समावेशन को बढ़ावा दे रहे हैं, लेकिन इन योजनाओं को सामाजिक न्याय के साथ और अधिक जोड़ने की आवश्यकता है।

उदाहरण: मनरेगा और आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं वंचित वर्गों के लिए आर्थिक और स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान कर रही हैं। अम्बेडकर के विचारों को लागू करने के लिए इन योजनाओं को और अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

चुनौतियाँ और समाधान:

चुनौतियाँ:

- **सामाजिक रूढ़ियाँ:** जातिगत और लैंगिक रूढ़ियाँ समाज में गहरे तक जड़ें जमाए हुए हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में दलितों के खिलाफ सामाजिक बहिष्कार और महिलाओं के खिलाफ हिंसा अभी भी प्रचलित है।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य में असमानता:** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच में भारी अंतर है। डिजिटल डिवाइड ने इस असमानता को और बढ़ाया है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- **राजनीतिक ध्रुवीकरण:** सामाजिक और धार्मिक ध्रुवीकरण लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक एकता को कमजोर कर रहा है।
- **आर्थिक असमानता:** धन का असमान वितरण सामाजिक तनाव और आर्थिक अस्थिरता को बढ़ा रहा है।

समाधान

- **सामाजिक जागरूकता अभियान:** स्कूलों, कॉलेजों, और समुदायों में जातिगत और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाए जाएं। सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए अम्बेडकर के विचारों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
- **डिजिटल शिक्षा का विस्तार:** डिजिटल इंडिया और स्वयं जैसे मंचों को ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों तक पहुंचाया जाए। डिजिटल डिवाइड को कम करने के लिए मुफ्त इंटरनेट और डिवाइस उपलब्ध कराए जाएं।
- **संवैधानिक शिक्षा:** स्कूल और कॉलेज पाठ्यक्रम में संवैधानिक मूल्यों और अम्बेडकर के विचारों को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।
- **नीतिगत सुधार:** लैंगिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा देने के लिए नीतियों को और प्रभावी बनाया जाए। उदाहरण के लिए, कार्यस्थल पर लैंगिक समानता और हिंसा के खिलाफ सख्त कानूनी अमल।
- **सामुदायिक भागीदारी:** सामाजिक समरसता और समावेशी विकास के लिए गैर-सरकारी संगठनों, सामुदायिक समूहों, और स्थानीय नेताओं की भागीदारी बढ़ाई जाए।

निष्कर्ष:

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के विचार उभरते भारत के लिए एक व्यापक और प्रेरणादायक रोडमैप प्रदान करते हैं। उनकी सामाजिक समानता, शिक्षा, लोकतंत्र, लैंगिक समानता, और आर्थिक न्याय की दृष्टि आज के भारत की सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम है। भारत को एक समावेशी, समृद्ध, और न्यायपूर्ण राष्ट्र बनाने के लिए अम्बेडकर के विचारों को नीतिगत, सामाजिक, और शैक्षिक स्तर पर लागू करने की आवश्यकता है। उनकी दृष्टि न केवल दलित और वंचित वर्गों के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक सशक्त और समान भारत का निर्माण करने में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

सन्दर्भ:

1. यशवंत सोनटक्के, *बाबा साहेब डॉ॰ अम्बेडकर के विचार*, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009।
2. सौरभ उपाध्याय, *डॉ॰ अम्बेडकर और दलित चेतना*, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2011।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

3. महेन्द्र कुमार मिश्रा, *दलित अधिकार एवं व्यवहार*, एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2011।
4. रामगोपाल सिंह, *सामाजिक न्याय, लोकतंत्र व जाति व्यवस्था*, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1990।
5. रघुवीर सिंह, *डॉ० अम्बेडकर और दलित चेतना*, कामना प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000।
6. रूपचन्द गौतम, *दलित रिपोर्टिंग*, नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007।
7. राकेश कुमार, *डॉ० बी० आर० अम्बेडकर व राष्ट्रनिर्माण*, ब्लू रोज पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2018।
8. भद्रशील रावत, *राष्ट्र निर्माण में बाबासाहेब डॉ० आंबेडकर का योगदान*, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021।
9. सुनील जोगी, *दलित समाज के पितामह: डॉ० भीमराव अम्बेडकर*, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2022।
10. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, *डॉ० भीमराव रामजी आंबेडकर: यात्रा के पदचिह्न*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2021।